देश-विदेश

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

उत्तर प्रदेश

आरआई सम्मेलन का पहला दिन: केंद्रीय... 12

'गौ आधारित प्राकृतिक खेती करें किसान' 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 89
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
सोमवार | 09 जनवरी, 2023

बकरी पालन पर कृषि वैज्ञानिकों ने दिया जोर

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। कम खेती होने की दशा में पशुपालन किसानों की आजीविका का मुख्य साधन है। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.सोहन लाल वर्मा ने किसानों की आय बढ़ाने में बकरी पालन की भूमिका विषय पर बताते हुए कहीं। उन्होंने बताया कि बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है और सूखे के समय भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है। बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जमुनापारी, बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं। अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

दैनिक जागरण कानपुर 09/01/2023

पोषक तत्वों की कमी से घटा आलू का आकार

जासं, कानपुर : मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी फसलों की पैदावार पर असर डाल रही है। आलू की बोआइ करने वाले किसान इस बार ज्यादा परेशान हैं। बिल्हौर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा व अलीगढ़ में कई किसानों के यहां आलू के कंद अपेक्षानुसार छोटे हो रहे हैं।

बिल्हौर में बिहारीपुर गांव निवासी किसान अंकित कटियार ने बताया कि कंद छोटे होने से इस वर्ष प्रति बीघा आलू का उत्पादन भी घटा है। कई किसान इस समस्या से जूझ रहे हैं। पहले जहां एक बीघा में 40 क्विंटल तक पैदावार होती थी, वहीं इस बार 25 से 30 क्विंटल तक पैदावार हो रही है। लेकिन ज्यादा लाभ नहीं दिखाई दे रहा है। इसी तरह कन्नौज में तिर्वा तहसील के भिखनीपुरवा गांव निवासी किसान विजय सिंह ने बताया कि खेतों में आलू का कंद छोटा हो रहा है। इससे 10 से 20 प्रतिशत तक पैदावार घटी है।

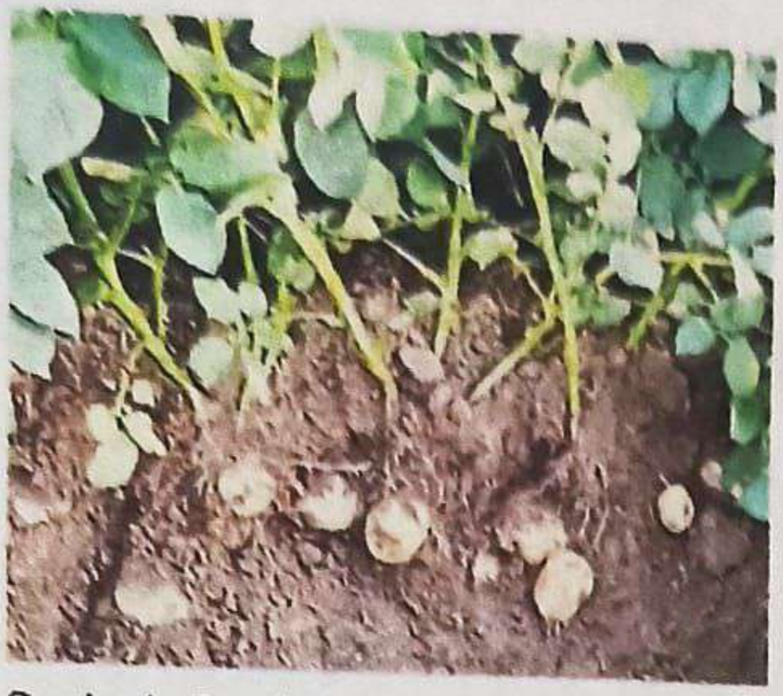

बिल्हौर के बिहारीपुर गांव में लगी आलू की फसल • किसान

आलू का आकार छोटा होने से बिल्हौर, कन्नौज, फर्रुखाबाद के किसान कृषि विश्वविद्यालय से मांग रहे सलाह

जैविक खाद न होने से बढ़ी समस्या

: सीएसए विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञानी डा. राजीव कुमार ने बताया कि जैविक खाद व गोबर खाद की घटती उपलब्धता, फसल अवशेषों की रीसाइकलिंग न होने और फसल चक्र का सही पालन न होने से मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है। आलू की प्रति टन पैदावार के लिए लोहा, मैंगनीज, बोरान, जस्ता, तांबा व मोलिब्डेनम की क्रमशः 160, 12, 50, नौ, 12 तथा 0.3 ग्राम मात्रा जरूरी है।

रोगों का खतरा भी बढ़ रहा:जस्ते की कमी से आलू में पौधों की वृद्धि रुक जाती व पत्ती के अग्र भाग से शुरू होकर किनारों के आसपास पत्तियों का रंग कांसा या पीला हो जाता है।

आलू में सूक्ष्म पोषक तत्वों की अहम भूमिका

आलू की पैदावार व कंद गुणवत्ता में सूक्ष्म पोषक तत्वों की विशिष्ट भूमिका है। जस्ता व मैंगनीज की उपस्थिति से खाद्य पदार्थ पौधे की पत्तियों से होकर कंद में पहुंचते हैं और स्टार्च में रूपांतरण की दर बढ़ती है। जस्ता, लोहा, बोरान व मोलिब्डेनम आलू में मध्यम व बड़े आकार के कंदों की संख्या बढ़ाते हैं। जस्ता, तांबा, मैंगनीज, बोरान व मोलिब्डेनम कंदों में एस्कार्बिक एसिड को बढ़ाते हैं।

दैनिक भास्कर
सोमवार, 09 जनवरी 2023 लखनऊ 09

सार सुर्खियां

किसानों की आय बढ़ाने में बकरी पालन की भूमिका

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं।उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है।गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्त्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है।उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है।डॉक्टर वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है।उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसे जमुनापारी,बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है।साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-2अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

रविवार 08 जनवरी 2023 | अंक - 355

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DA

किसानों की आय बढ़ाने में बकरी पालन की भूमिका

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर सोहन लाल वर्मा ने बताया कि खेती और पशु दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। उन्होंने बताया कि खेती कम होने की दशा में किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन है। गरीब की गाय के नाम से मशहूर बकरी हमेशा ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। उन्होंने कहा कि बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रखरखाव का खर्च भी कम होता है।डॉक्टर वर्मा ने बताया कि सूखे के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम आसानी से हो जाता है। उन्होंने कहा कि बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जैसः जमुनापारी,बरबरी एवं ब्लैक बंगाल प्रमुख है। डॉक्टर वर्मा ने बताया कि डेढ़ वर्ष की अवस्था में बकरी बच्चा देने की स्थिति में आ जाती है। प्रायः एक बकरी एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। उन्होंने कहा कि बकरी पालन व्यवसाय को करने में किसी विशेष तकनीकी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। साथ ही जरूरत पड़ने पर आसानी से बेचकर नगद धन प्राप्त किया जा सकता है। इनके लिए बाजार स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध होते हैं अधिकतर व्यवसाई गांव से ही बकरी बकरे खरीद कर ले जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि बकरी व्यवसाय अपनाकर खेती के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

दैनिक जागरण कानपुर 09/01/2023

बकरी पालन से बढ़ाएं आय

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन विज्ञानी डा. सोहन लाल वर्मा ने किसानों को बकरी पालन करने की सलाह दी है। वर्तमान में बकरी की जमुनापारी, बरबरी व ब्लैक बंगाल प्रजातियों का पालन किया जा सकता है। वि.